पाठ 20
हमारी जनजातीय कलाएँ

आइए सीखें–

● जनजातीय लोक कलाओं की समझ ● प्रदेश की प्रमुख जनजातियों की जानकारी ● पर्यावरण के प्रति जुड़ाव ● युग्म शब्द ● एक वचन, बहुवचन की समझ।

शहर में जनजातीय कलाप्रदर्शनी लगी थी, जिसमें मध्यप्रदेश की विभिन्न जनजातियों की कलाओं को उनके स्वाभाविक परिवेश में बताया गया था। प्रदर्शनी में इन जनजातियों के घरों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं को ठीक उसी तरह संजोया गया था जैसे वे अपने वास्तविक जीवन में व्यवहार में लाते हैं।

मेखला और उसकी सहेलियाँ सुप्रभा और फातिमा प्रदर्शनी देखने गई थीं। उनके साथ जाह्नवी दीदी भी थीं। उन्होंने मध्यप्रदेश की जनजातियों के रहन–सहन का गहराई से अध्ययन किया था।

प्रदर्शनी के प्रवेश द्वार को बड़े ही कलात्मक ढंग से सजाया गया था। सजावट में लोक संस्कृति की छाप स्पष्ट दिख रही थी। द्वार पर गोबर और मिट्टी से कई प्रकार के चित्र उकेरे गए थे। इन चित्रों को कई रंगों से अच्छी तरह रंगा गया था। चित्र इतने आकर्षक थे कि इन्हें देखकर लगता ही नहीं था कि इतनी साधारण वस्तुओं से इतने सुन्दर चित्र बनाए जा सकते हैं।

वे सभी प्रदर्शनी के अन्दर गईं। प्रदर्शनी को जगह–जगह बाँस, पत्तों, सन, सुतली और लकड़ी से बनी कलात्मक वस्तुओं से सजाया गया था। प्रदर्शनी में एक जगह लाख की चूड़ियाँ, पाटले, चूड़े, खिलौने, शृंगार–पेटिका इत्यादि कई वस्तुएँ प्रदर्शन और बेचने के लिए रखी थीं। जाह्नवी दीदी ने बताया कि लाख, पलाश और इसी प्रकार के कुछ पेड़ों की गोंद या रस से बनाई जाती है। लाख की बनी बहुत–सी वस्तुओं का उपयोग जनजातियों में खूब

शिक्षण संकेत– ● शिक्षक जनजातीय कलाओं के बारे में बताएँ। ● सम्भव हो तो जनजातीय शिल्प की वस्तुओं को दिखाएँ। ● बच्चों से लोककला शैली के चित्र और वस्तुएँ बनवाएँ। ● स्थानीय बोली के शब्दों के मानक रूप बनाएँ पाठ में आए विशेष शब्दों के स्थानीय रूप बताएँ। ● लोकजीवन में पर्यावरण के महत्व के बारे में बताएँ।

होता है। प्रदर्शनी में काष्ठ शिल्प और ध ातु शिल्प का भी प्रदर्शन किया गया था। काष्ठ और धातु के बने खिलौने, कलात्मक और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ देखने योग्य थीं। वे सभी प्रदर्शनी देखने लगीं। मेखला ने कहा–''दीदी, इनमें से कुछ चीजें तो हमारी समझ से परे हैं, आप कुछ बताइए न।''

जाह्नवी दीदी ने कहा– ''अच्छा, तुम सभी प्रदर्शनी देखती चलो और ध्यान से मेरी बात भी सुनती रहो।'' सुप्रभा बोली–''हाँ, दीदी। हम सब ध्यान से सुनेंगी। जाह्नवी कहने लगीं– ''मध्यप्रदेश में अनुसूचित जनजातियों की संख्या अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक है। यहाँ गोंड भील, कोरकू, कोल, बैगा, मारिया और सहरिया प्रमुख जनजातियाँ हैं। इसके अतिरिक्त भी कई जनजातियाँ प्रदेश में निवास करती हैं।''

''ये जनजातियाँ प्रकृति के सबसे निकट रहती हैं, इनका जीवन प्रकृति पर निर्भर है। ये जनजातियाँ स्वभाव से कला प्रेमी हैं। इनकी कलाओं पर प्रकृति की सुन्दरता का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है। इनकी कलाओं में पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और चाँद–सूरज जीवन्त हो उठे हैं।''

फातिमा ने कहा–''शायद इसीलिए इन कलाकृतियों में प्राकृतिक प्रतीकों और वस्तुओं का प्रयोग अधिक किया गया है।'' जाह्नवी ने उत्तर दिया –''हाँ, फातिमा। यह देखो, इस खण्ड में गोंड जनजातीय कला को दिखाया गया है। इनकी इस कला को 'चीन्हा' कहते हैं। गोंड़ स्त्रियाँ अपने घरों की दीवारों के उठे हुए किनारों को गेरू, कजली या नील के रंगों से रंगती हैं। दीवारों पर गोल या तिकोन रेखाएँ उभार कर उन्हें भी रंगों से सजाया जाता है। ताकों, खूँटियों और अनाज रखने की कोठियों को भी चित्रांकित किया जाता है। आजकल गोंडी चित्र शैली के चित्रों की देश–विदेश में खूब माँग है। गोंड रस्सी, मचिया, सुतली, कृषि के औजार, खुमरी, फंदे और धनुष–वाण कलात्मक ढंग से बनाते हैं। यहाँ ये सब चीजें दिखाई गई हैं।

इन्हें भी जानें–

प्रदर्शनी – जहाँ कोई वस्तु या वस्तुएँ आम जनता को दिखाने के लिए रखी जाती हैं। शिल्प–कला। उकेरना–उभारना। पलाश–ढाक या छेवले का वृक्ष।

अब बताइए–

- प्रदर्शनी के प्रवेश द्वार को किस प्रकार सजाया गया था?
- आपके यहाँ द्वार को कैसे सजाते हैं?
- आपके यहाँ 'चीन्हा' की तरह और कौन–कौन सी कलाएँ हैं? उनके नाम बताइए।

जाह्नवी, मेखला और उसकी सहेलियों के साथ आगे बढ़ी। जाह्नवी ने बताया– यहाँ भील जनजाति की कलाओं को प्रदर्शित किया गया है। दीवारों पर बने ये भित्तिचित्र देखिए। ये भील परम्परा की विशेष शैली है। इसे 'पिथौरा' कहते हैं। पहले ये चित्र पिथौरापर्व पर बनाए जाते थे। ये लोग आँगन में अल्पनाएँ माँडते हैं।

भील कला को देखती हुईं वे सभी एक झोंपड़ी और उसके आँगन के सामने खड़ी हो गईं। जाह्नवी दीदी ने बताया–''वह सहरिया जनजाति का परम्परागत आवास है। ये लोग दीवारों को चित्रित करने के साथ–साथ अपनी गृहस्थी के सामान को भी आकर्षक ढंग से बनाते हैं। सहरिया जिस कोठी या बखार में अनाज को रखते हैं उसे विशेष रूप से सजाते हैं। वह देखो, चित्रों से सजी यह कोठी 'पेई' कहलाती है। 'पेई' वास्तव में सहरिया चित्रकला का अद्भुत नमूना है।

सहरिया खण्ड से लगा हुआ हिस्सा कोरकू जनजाति का था। कोरकू आवास में दीवारों पर और दरवाजे के आजू–बाजू बड़े ही सुन्दर चित्र बनाए गए थे। जाह्नवी दीदी बता रही थीं।–''ये कोरकू जनजाति की चित्रकला है, इसे 'गुदनी' कहते हैं। गुदनी के लिए सफेद खड़िया या लाल मिट्टी का

प्रयोग किया जाता है। 'गुदनी' बनाना बड़ा शुभ माना जाता है। इसे बनाते समय सूपे में गोबर की देवमूर्ति रखकर पारम्परिक गीत गाए जाते हैं।''

तभी मेखला ने लकड़ी की एक सुन्दर कलाकृति को देखकर पूछा–''दीदी, यह क्या है? जाह्नवी ने बताया–यह 'गाता' है। कोरकू जनजाति में मृतकों की याद में 'गाता' स्थापित करने की प्रथा है। 'गाता' लकड़ी के ऊपर सुन्दर आकृतियाँ उभार कर बनाया जाता है।''

इन्हें भी जानें–

अल्पना–रंगीन कलात्मक रेखाचित्र, चौक मॉड़ना, बनाना, पूरना। परम्परा–रिवाज, प्रथा। कलाकृति–कलात्मक ढंग से बनी वस्तु। आवास–घर, रहने का स्थान। स्थापित–थापना।

अब बताइए–

- 'भील' अपने आँगन को किस प्रकार सजाते हैं?
- गुदनी' बनाते समय क्या किया जाता है?
- घर के समान, वर्तन आभूषणों के स्थानीय नाम पता कीजिए।

वे सभी प्रदर्शनी में सजी विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों की प्रशंसा करती हुई 'भारिया' जनजाति कला खण्ड में पहुँचीं। 'भारिया' जनजाति के घर पर दरवाजे के आसपास परम्परागत शैली में चित्र बनाए गए थे। वहाँ बाँस और 'छिन्द' के पत्तों से बनाई गई रोजमर्रा के काम की चीजें दिखाई गईं थीं। जाह्नवी ने बताया कि भारिया जनजाति के लोग पेड़ की छाल से रस्सी बनाने में बड़े निपुण होते हैं।

आगे के खण्ड में एक बैगा जनजाति के परिवार के रहन–सहन को प्रदर्शित किया गया था। एक बैगा युवती अपनी परम्परागत वेशभूषा में बैठी थी। उसके हाथ पैर और चेहरे पर बड़े ही सुन्दर चित्र बने थे। जाह्नवी ने बताया–''बैगा जनजाति की स्त्रियाँ अपने शरीर के विभिन्न अंगों पर आकर्षक चित्र गुदवातीं हैं। इसे 'गोदना' कहते हैं। 'गोदना' गुदवाना अन्य जनजातियों में भी बहुत लोकप्रिय है।''

कोल जनजाति का आवास भी सुन्दर चित्रों, बाँस, घास, लकड़ी तथा मिट्टी की बनी कलात्मक वस्तुओं से सजा था।

मेखला ओर उसकी सहेलियाँ प्रदर्शनी देखकर बहुत खुश थीं। उन्हें अपने प्रदेश की जनजातीय कलाओं और उनके रहन–सहन के बारे में बहुत–सी जानकारी मिली थी। जाह्नवी दीदी कह रही थीं–''जनजातियों की जीवनशैली और लोककलाएँ प्रकृति के बहुत करीब होती है। ये हमारे प्रदेश की अमूल्य धरोहर हैं। इनके गीत–संगीत और नृत्य भी जनजातीय जीवन के विशिष्ट प्रतीक है। आजकल ये सभी जनजातियाँ अपनी परम्पराओं को जीवित रखते हुए विकास के मार्ग पर भी आगे बढ़ रही हैं। इन जनजातियों के सैकड़ों, हजारों सुशिक्षित व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में पूरी योग्यता और निपुणता के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर प्रदेश और देश की प्रगति के लिए कार्य कर रहे हैं।''

मेखला, सुप्रभा और फातिमा जाह्नवी दीदी के साथ घर लौट रहीं थीं पर उनका मन अब भी उन्हीं मनमोहक चित्रों और कलाकृतियों में खोया था।

इन्हें भी जानें–

शैली–तरीका, प्रकार। छिन्द–एक वृक्ष। रोजमर्रा–दैनिक। निपुण–कुशल, दक्ष, पारंगत। वेशभूषा–पहनावा। कंधे से कंधा मिलाना–साथ–साथ मिलकर काम करना।

बोध प्रश्न

1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) जनजातीय कला प्रदर्शनी में क्या बताया गया था?

(ख) प्रदर्शनी को किन–किन चीजों से सजाया गया था?

(ग) मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ कौन–कौन सी हैं?

(घ) गोंडी चित्रकला शैली को क्या कहते हैं?

(ङ) 'गुदनी' चित्रकला में कौन–कौन सी मिट्टी का प्रयोग किया जाता हैं?

शिक्षण संकेत– ● शिक्षक बताएँ कि गोदना गुदवाने वाली सुई असंक्रमित होनी चाहिए। अन्यथा उससे शरीर में संक्रमण हो सकता है।

2 सही उत्तर छाँटकर लिखिए–

(1) सहरिया जनजाति की अनाज भण्डारण की विचित्र कोठी कहलाती है?

(क) सेई (ख) पेई

(ग) गुदनी (घ) गाता

(2) 'गाता' बनाने वाली जनजाति है?

(क) भील (ख) कोल

(ग) भारिया (घ) कोरकू

(3) भील भित्ति चित्रकला कहलाती है?

(क) पिथौरा (ख) गोदना

(ग) चीन्हा (घ) पेई

(4) लाख बनाई जाती है?

(क) छाल से (ख) गोंद से

(ग) पत्तियों से (घ) जड़ से

3. निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही या गलत का चिह्न लगाइए–

(क) जनजातियाँ स्वभाव से ही कलाप्रेमी होती हैं।

(ख) जनजातियों की दैनिक वस्तुएँ कलात्मक नहीं होती हैं।

(ग) जनजातीय लोक कलाओं पर प्रकृति का प्रभाव नहीं है।

(घ) जनजातीय जीवन और परम्पराएँ प्रदेश की अमूल्य धरोहर हैं।

(ङ) गीत,संगीत और नृत्य जनजातीय परम्परा के महत्वपूर्ण अंग हैं।

भाषा अध्ययन

(1) इन शब्दों के बहुवचन लिखिए–

जैसे – जाति– जातियाँ पत्ती– पत्तियाँ

मूर्ति ——— स्त्री ———

प्रति ——— कोठी ———

गति ——— रोटी ———

(2) पाठ में आए युग्म शब्दों को छाँटिए और उदाहरण अनुसार लिखिए–

उदाहरण – पेड़–पौधे – पेड़ और पौधे

———————— ————————

———————— ————————

———————— ————————

———————— ————————

(3) इन शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और लिखिए –

1. प्रदर्शनी ———————— ———————— ———————— ————————

2. चित्रों ———————— ———————— ———————— ————————

3. कृति ———————— ———————— ———————— ————————

4. सुप्रभा ———————— ———————— ———————— ————————

5. पर्व ———————— ———————— ———————— ————————

6 शृंगार ———————— ———————— ———————— ————————

(4) उदाहरण अनुसार शब्दों को मिलाकर लिखिए–

जैसे– चित्र + अंकित = चित्रांकित

पृष्ठ + अंकित = ————————

निम्न + अंकित = ————————

रेखा + अंकित = ————————

योग्यता विस्तार –

- प्रदेश की जनजातियों के रहन–सहन के बारे में शाला पुस्तकालय से और अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।
- घरों में प्रयोग होने वाली लकड़ी, धातु या मिट्टी से बनी वस्तुओं की सूची बनाइए।
- जनजातीय कलाओं से सम्बन्धित वस्तुएँ संग्रहीत कीजिए।
- पाठ में दिए गए चित्रों को बनाइए और उनमें रंग भरकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।